बोला अब बचालो अब भजन करूँगा। इस पर उन्होंने उसको छोड़ दिया। यह पत्र रामानन्द बाबा को दिखा देना।
कसूरों को माफ करना।

आपका
लक्ष्मी नारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-६
१६-०३-१९६४

श्री मान्यवर महोदय पण्डित महेश प्रसाद जी,
कल्कि भगवान की जय सहित आपके चरण युगल में नमस्कार।
आशाओं से भरा हुआ, बड़े काम का, प्रयोजन को सिद्ध करने वाला, मार्ग का दिखाने वाला, पथ प्रदर्शक, उजाला फेंकता हुआ, आपका पत्र मिला। बड़े भाग्यशाली आप हैं और आपके विश्वास करने वाले नर नारी भाई बहिन भी, जिनको भगवान आज्ञा देकर के अपना काम ले रहे हैं। आपका किया हुआ सत्कर्म आने वाली पीढ़ियों को, सत्युग को, धर्म को, देवता लोगों को सहारा देने वाला है। आप सत्युग की बुनियाद भर रहे हैं और अब आपने सम्भल तीर्थ की महिमा को भी समझ लिया होगा। यही के निवासियों को भगवान कल्कि यह गौरव क्यूँ प्रदान कर रहे हैं? आपको भगवान ने जगाया। संसार क्षीरसागर वासी भगवान को जगाता है आपको भगवान अनुभव देकर स्वयं जगा रहे हैं। भक्त भगवान का यह विचित्र नाता रिश्ता देखने में आ रहा है। आपने उन्हें नहीं छोड़ा न उन्होंने आपको छोड़ा। कल्कि भगवान अभी प्रकट नहीं कहला रहे हैं। परन्तु यह तो आप भी स्वीकार करेंगे ही कि जो श्रद्धा विश्वास और प्रेम सम्भल निवासियों में दिख रहा है वह बिना कल्कि भगवान के दिये हुए अनुभव रूपी कृपा के बिना नहीं है। बिना बारिश के कहीं खेती हरी होती है। खेती हरी है तो बारिश हुई है। खेती स्वयं सिंचाईं का प्रमाण है। मुझे तो कल्कि भगवान बिना प्रत्यक्ष हुए भी प्रत्यक्ष ही की तरह दिख रहे हैं और जहाँ वे अनुभव देने की कृपा कर रहे हैं वहाँ अपनी आगामी लीला भी प्रकट करेंगे ही। यह निश्चित है अतः (इसलिये) हम सबको बिना किसी की ओर देखे और बिना किसी की बात सुने, आँख मींच कर कल्कि भगवान का ही पल्ला पकड़ना चाहिए चूंकि उनका पल्ला पकड़ने योग्य है। उनसे हमेशा भक्तों के कष्ट दूर होते आये हैं और होंगे। यदि हम सब ईमानदारी से भगवान का अहसान मानते हुए लगे रहेंगे तो हम तो निहाल हो ही जायेंगे, दुनिया को भी प्रेरणा देने की स्थिति में होंगे। सम्भल के भाई बहिनों से हमारी जय कल्कि भगवान महाराज की और बद्धांजलि, भूमिष्ट होकर प्रणाम कहिये, नमस्कार कहिये।

नाम की ध्वनि लगा लें और आप विद्वान हैं। थोड़ा बहुत भाषण कर लें जहाँ तक हमें पता लगा है बाबा रामानन्द हमसे नाराज़ हैं। क्रोध उनकी नाक पर हरदम धरा रहता है।

मैं तो कल्कि भगवान के नाम लेवाओं की आबरू इज्जत, सुख और सन्मान ही चाहता हूँ। काम भगवान का प्रगट होने का अत्यन्त समीप ही आ गया है। वह हमारे हर शुभ काम में प्रत्यक्ष से खड़े दिखाई देते हैं। अन्तष्कर्ण से भगवान कल्कि का नाम जपते रहना। कल्कि भगवान का भजन ही सब विघ्न बाधा और क्लेशों का नाश करने वाला है। उनकी शरण ले लीजिये। हमारे यहाँ जयन्तियाँ यह दोनो ही मनाई जायेंगी। पूर्ण आहुति १४-१५ अगस्त को बड़ी धर्मशाला बेरी वाली गली में होगी। कल्कि भगवान के बड़ी कृपा से भरे अनुभव आ रहे हैं। भक्तों की तरफ से जी उदास है। हर हालत में भगवान की शरण ही सार है। मन की बात सिवाय उनके कौन जाने। तस्वीरें बाबा रामानन्द जी ने मांगी थीं वह यहीं धरी की धरी रह गईं न वे ले जा पाये न हम दे पाये। उनसे और उनके सब साथियों से हमारी जय कल्कि भगवान की कहना।

आपका
लक्ष्मी नारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-६
९-०५-१९६४

महेश प्रसाद जी,
जय श्री कल्कि भगवान जी की।

बटन की बहू ने अनुभव में हरिद्वार में नृसिंह भवन की धर्मशाला में देखा कि जो कल्कि की मालायें कर रहे हैं उनपर राक्षस व राक्षसियाँ हथियार ले लेकर जान से मारने के लिये टूट पड़ रहे हैं और कल्कि भगवान तीरों से उनके गले काट काटकर जमीन पर गेर (गिरा) रहे हैं।

धनीराम ने अनुभव में देखा कि जिस डॉक्टर पर दवाई के लिये जाते है वह जय श्री कल्कि लिखी हुई तख़्ती दिखा देता है और जब उससे कहते है कि दवाई दो यह क्या दिखा रहे हो तो वह कह देता है कि ये ही सब रोगों की दवा है।

हमारे भाई के लड़के ने देखा कि कहीं रास्ते में जा रहे हैं तो बहुत से आदमी आपस में कह रहे है कि बहुत जल्दी ही प्रलय जैसा काम संहार होने वाला है। फिर भौचाल आया जिसे देखकर भय हो जाए। आगे चलकर एक नदी के किनारे हज़ारों भयंकर आदमी दिखे जो आदमियों को पकड़ पकड़ कर पानी में डुबो रहे हैं। उन डुबाने वालों में मुझे भी देखा। जब उन डुबाने वालों ने हमारे भतीजे को पकड़ लिया तो वह भाई बचाओ चिल्लाने लगा। उसने सुनाया कि मेरे बचाने की बात कहने पर तुमने मुझे ही धमकाया कि रात दिन तुझसे कहते रहते हैं भजन कर तू भजन क्यों नहीं करता। वह

और मन्दिर की आमदनी बढ़ाने के लिए लिखेंगे। बड़े प्रसन्न होकर के भगवान की मालायें जपते चले जायें। अभी तक तो कल्कि भगवान ने अपना भजन करने वालों को अनुभव की दौलत से मालामाल कर ही दिया है। हमें आशा है कि आप भी खाली हाथ नहीं रहेंगे। भजन रूपी कर्म का फल भगवान आप जैसे सच्ची आत्मा को अवश्य देते हैं। कल्कि भगवान ने चाहा तो हमें सम्भल फिर बुलावेंगे। हमें आपके यहाँ आने की चाह तो लग ही चुकी है। सम्भल की माताओं व बहिनों से हमारी ओर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करना कि वह सब कल्कि भगवान की मालाओं को बढ़ावे और अपने प्राचीन जन्मों के, रामावतार व कृष्णावतार के संस्कारों को उजालने की कोशिश करें। कल्कि जी का तेजोमय श्री विग्रह अनुभव में प्रगट हो चुका है और सर्व सिद्धियों के स्वामी, सर्व शक्तिमान, महा महिमाशाली श्री कल्कि भगवान बहुत शीघ्र ही प्रगट होंगे। कल्कि का नाम जप करके, आप लोग अनित्य में नित्य के दर्शन करने की चेष्टा करें। अन्धेरे में उजाले को देखें। निराशा में आशा के दर्शन करें। स्वामी जी वृन्दावन चले गये। आपका कदम अब अगाड़ी को ही बढ़े पिछाड़ी न पड़े। सम्भल के बच्चे, बूढ़े बड़े सबसे, दिल्ली के कल्कि मण्डल की जय श्री कल्कि भगवान की। कमल नयन, खड़्गधारी, कृपाकारी विशाल वक्षस्थल वाले, वात्सल्य भाव परिपूर्ण, भक्त वत्सल श्री कल्कि भगवान महाराज हमें और आपको बहुत जल्दी अपनी शरण में ले लें। यह हमारी वासना है।

आपका
लक्ष्मी नारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
२९–०७–६५

महेश प्रसाद जी,

जय श्री कल्कि भगवान की।

आगे समाचार यह है कि हम लोग दिल्ली से सम्भल आने की स्थिति में नहीं हैं। दिल्ली से शायद रामेश्वर दयाल ज्योतिषी या उनके साथ कुछ साथी आ जायें परन्तु मण्डल के आने का किसी में उत्साह नहीं दिखाई देता। कल्कि जयन्तियाँ दो पड़ रही हैं एक २–०८–६५ की एक ६–०८–६५ की। आपके यहाँ सम्भल में बाबा रामानन्द जी शायद २–०८–६५ की मना रहे हैं। पता लगा लेना यदि वे २–०८–६५ की मनायें तो आप ६–०८–६५ की मना लेना। जिससे कि दोनो का टकराव न हो। कल्कि भगवान का नाम लेकर हाथ जोड़कर उन्हीं के निमित्त जितने घण्टे मुनासिब समझो

जय कल्कि जय जगत्पते,
पद्मा पति जय रमापते।

संस्कार प्रस्फुटित होते हैं भगवान ने स्वप्न में ध्यान करने के लिये जो हमें मूर्तियाँ प्रदान की हैं, जो चेहरा दिखाया है, जैसी आँखें गरदन, सीना और सुन्दरताई दिखाई है वह बात दुनिया के पर्दे पर अभी तक कहीं मिली नहीं वैसे कल्कि भगवान के प्रेम करने के नाते

सीया राम मय सब जग जानी,
करहु प्रणाम जोड़ जुग पानी।
अनेक रूप रुपाय: विष्णवे प्रभ् विष्णवे
जो भगवान की लीला देखते जाओ बगल में दबाओ
कल्कि कल्कि कहते जाना,
चित उनके चरणों में लगाना।

कल्कि भगवान ने नया हुक्म भेजा है। कल्कि कल्कि कहते जाओ रहस्यमय पर्दे खुलते चले जायेंगे।

आपका
लक्ष्मी नारायण

॥श्री कल्कि भगवते नम: ॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
२८–०८–६३

सम्भल नगरी के जगमगाते हुए रत्न, भगवान कल्कि विष्णु के महान कृपा पात्र, सम्भल नगरी के निवासियों के लिये मार्ग दर्शक ज्योति स्तम्भ रूप कल्कि भगवान के परम प्यारे

प्रिय महेश जी,

आपके यहाँ में रहकर हमें अलौकिक आनन्द आया, हज़ारों स्त्रियों का कल्कि भगवान में तीव्र तन्मयता से कीर्तन का करना। भगवान की प्रकट हुई लीला का द्योतक था। जैसे बिना वर्षा के खेती हरी नहीं हो सकती वैसे ही बिना हरि की कृपा हुए इस प्रकार की निष्ठा खेती की तरह पनप नहीं सकती। मुझे तो इसमें कल्कि भगवान की लीला का ही हाथ दिखाई दिया। इस निष्ठा को बढ़ाते ही चले जायें। आपका अवतार इसीलिये है। सम्भल में भगवान की बड़ी बड़ी प्यारी रूहें मालूम दे रही हैं। उनका मन यदि भगवान में लग जाये तो आपका भी महान पुण्य होगा। भजनों की किताब छपने की तैयारी हो रही है। छपते ही आपके पास भेजेंगे। जैसे दिल्ली भगवान की लीला से खाली नहीं है वैसे ही सम्भल भी भगवान की लीला से खाली नहीं है। सिंचाई का काम भगवान ने आपको सौंपा है। इन्दौर के राजघराने का पता भेजना। दिल्ली के मण्डल की तरफ से हम उनको कल्कि विष्णु मन्दिर की विशेष सम्भाल के लिये और बगीचे की चार दीवारी की उन्नति के लिये

आपके दोनों पत्र मिल चुके हैं और हम भी आपको एक पत्र दे चुके और दूसरा दे रहें हैं। हमारा इरादा कल्कि जयन्ती से पहले यानी २६ जौलाई से पहले आने का है जितने जने बन सकेंगे आ जायेंगे और २६ जौलाई से कल्कि जयन्ती प्रारम्भ हो जाती है नहीं मालूम शर्मा की तिकड़म की वजह से हमें कल्कि जयन्ती मनाने की कौनसी तारीखें नसीब हों, हमें नहीं मालूम हमारी और लल्लन की तन्दुरुस्तियाँ ढीलीं हैं इसलिये हम आराम आराम से हाय हत्या के साथ कदम नहीं रख रहें हैं।

भगवान के नाम से ही सन्तोष कर लेते हैं। उनके सिवाय हमारा सहारा ही क्या है बेड़ा पार लगाना उनका ही काम है। जिसने दिया है दर्दे दिल वही दवा करे। बिना घबराये मजबूती से खड़े रहो। कल्कि भगवान का नाम तुम्हारी जड़ें पाताल में पहुँचा देगा, पाताल में क्या उससे भी गहरी। भगवान का लाड प्यार आप पर न्यौछावर होगा। भगवान को भक्त प्यारे हैं, गौएं प्यारी हैं, ब्राह्मण प्यारे हैं, धर्म प्यारा है जो लोग कल्कि भगवान का नाम ले रहे हैं उन सबका मैं अपने को अहसानमन्द समझता हूँ क्योंकि वही मुझे जिला रहे हैं।

आपका
लक्ष्मी नारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
३–०७–१९६१

श्री महेश प्रसाद जी,

जय कल्कि भगवान की।

कल्कि भगवान से प्रेम करने वाले सम्भल के समस्त नर नारियों को हमारी सबकी जय कल्कि भगवान की। आगे समाचार यह है कि हमारा शनिवार को शाम को २७ तारीख को दिल्ली से चलने का इरादा है। अगर आप पत्र मिलते ही यह लिख दें कि हमें कौन से स्टेशन से, किधर किधर को गाड़ी पलटनी पड़ेगी। हमें बड़ी आसानी हो जायेगी। स्वामी जी ने हातिम सराय स्टेशन का नाम बताया था और मौहल्ला कोट में कल्कि विष्णु मंदिर बताया था। मुरादाबाद से चन्दौसी वाली लाइन बताई थी मगर हमें यह याद नहीं कि हमें कौन से स्टेशन जाना है। स्वामी जी ने बताया था कि गाड़ी तीन जगह पलटी जायेगी।

हम सबको कल्कि भगवान का पूजन, ध्यान व कल्कि नाम के जप पर ही दृष्टि को केन्द्रित रखना है जैसे राम की सीता और राम सीता के होते हुए भी धनुष के टूटे बिना एक दूसरे से मिल नहीं सके। ऐसे ही बिना कल्कि भगवान का नाम जपे न इस समय के राक्षस मरें, न कल्कि भगवान से मिलन हो, न अनुभव हो। इसलिये इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। इसी से अगले जन्मों के

।।श्री कल्कि भगवते नमः ।।

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
८–०६–१९६३

श्री कल्कि भगवान के महान कृपा पात्र, परम सरल, अनन्त जन्मों की तपस्या से परिपूर्ण पण्डित जी, कल्कि विष्णु मन्दिर के सेवक महेश प्रसाद जी और कल्कि भगवान के वरण किये हुए महाभाग्यवान आपके साथी लोग कल्कि भगवान के भक्त भाइयों और बहिनों व भाग्यशालिनी माताओं को और कल्कि भगवान से सन्मान प्राप्त पुराणों में प्रसिद्ध कल्कि भगवान की प्यारी सम्भल नगरी के कण कण को मेरा दोनों हाथ जोड़कर और भूमि पर मस्तक रख कर प्रणाम और जय श्री कल्कि भगवान की।

हम भी बड़े भाग्यशाली निकले हमारी आबरू इज्जत आपको विश्वास देकर रख ली। अब सम्भल सचमुच कल्कि भगवान की छावनी बन गई। हमारे कल्कि भगवान का झण्डा ही मानो गढ़ गया क्योंकि उसको उठाने वाला आप जैसा सन्मानीय भक्त भगवान ने प्रगट कर दिया। दिल्ली चेत रही थी। सम्भल चेता। ६० वर्ष पहले दिल्ली को भगवान ने अपना लीला स्थल बताया था। अब सम्भल भी भगवान का लीला स्थल बन गया। अब हमें आशा है कि आगे हमारा भला ही भला होगा। सम्भल के मायने हैं एक दम भला और जैसी जयपुर से चिट्ठी आई है मुझे आशा बंधती है वह भी चेत उठेगा।

भगवान कल्कि के नाम जप रूपी प्रचण्ड अग्नि में से कल्कि भगवान के अनेकों रूप प्रगट हो रहे हैं और हाथ की हाथ फल दे रहे हैं। भजन करने वालों की आवश्यकता है। कल्कि भगवान के अवतार का प्रमाण प्रत्यक्ष स्वयं सिद्ध हो जाता है। हमें भक्तों के साथ और भगवान के साथ बड़ी बेगर्जी और सच्ची लगन और सच्ची ईमानदारी रखने की परम आवश्यकता है। यथा लाभ संतोष सदा ही। एक भी कल्कि भगवान का नाम जपने वाला जहाँ होता है वहाँ समझों कल्कि भगवान का थाना पहरा बैठ गया। कल्कि नाम जप रूपी पुण्य से पुण्य का संचय बढ़ता ही चला जाता है और बिना लालच की कल्कि भगवान की प्रीति से हमारी और कल्कि भगवान की एक आत्मीयता हो जाती है और पतन की संभावना नहीं रहती। कल्कि भगवान के मंदिर के कच्चे हिस्से में गोबर की लिपाई भक्तों द्वारा महान पुण्य के बढ़ाने वाली होती है और आषाढ़ माह में भगवान को जल में बैठाल कर पूजा करने से अनन्तकाल तक हृदय में दाह नहीं होता। सम्भल निवासी श्रद्धावान भक्त जितना जितना कल्कि भगवान के मंदिर में नित्य दर्शन करेंगे, भोग लगायेंगे, वस्त्र चढ़ायेंगे, श्रृंगार करेंगे उनका पुण्य बढ़ता ही चला जायेगा। जिसके तेज़ के सामने संसार की कोई शक्ति ठहर नहीं सकेगी। जिसको फुरसत हो घण्टे दो घण्टे, २०,१० या ५ माला या दो एक माला जो भी करेंगे प्रसन्न आत्मा कल्कि भगवान पता नहीं उन्हें कैसा कैसा निहाल कर दें। स्वामी रामानन्द जी से कहना अनुभव बड़े आशा जनक कल्कि भगवान दे रहे हैं। उन्हें हमारी और आपकी स्वयं चिंता है ऐसा प्रतीत होता है।

॥श्री कल्कि भगवते नमः ॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६

पशुपतिनाथ के कृपा पात्र नरेश जी,
आशीर्वाद।

जय पशुपति नाथ महादेव की। जय गण्डक गंगा की। वस्तु स्थिति यह है कि समय बड़ा दारुण है। वास्तव में भारतवर्ष का इस समय कोई नेता ही नहीं,नाना प्रकार के नाम रूप धारण करने वाले कोई समाजवादी, कोई साम्यवादी, कोई सुधारवादी आदि आदि जाति पांति को तोड़कर वैवाहिक सम्बन्ध कराकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के वंश नाश करने का इन लोगों का दृढ़ संकल्प है। ऊपर से शिष्टाचार की बातें करते हैं। अधर्म और पाप से प्रेम करने वाली प्रजा का राज्य स्थापित करना चाहते हैं। राजा लोगों को फूटी आँख भी देखना नहीं चाहते। जिनके अधिकार सुरक्षित हैं और जो धार्मिक प्रवृति के हैं उन्हीं से मेरा सम्बन्ध है और उन्हें इन लोगों से बड़ा सावधान रहना चाहिए। कल्कि भगवान का अवतार हो चुका है यह मेरी, गुरुदेव की दी हुई दिव्य दृष्टि है। यह समय धार्मिक जगत की परीक्षा का है। इस समय जिनके अधिकार छिन चुके हैं उन सबको राज्य लिप्सा और राजनीति के पचड़े से परे हटकर सच्चे मन से भगवान की नवधा भक्ति पूर्ण अंगों सहित करनी चाहिये और प्रजाओं से करानी चाहिए।

धर्म की रक्षा के लिये राज्य की आवश्यकता होती है। राजा दण्डधारी गुरु होता है। भगवान की भक्ति करता हुए जीवन बिताए तो उसकी रक्षा के लिये अम्बरीष की तरह सुदर्शन चक्र छूटने लगते हैं। धर्म के मामले में आप किसी से न दबें। जनता के नाम के जो राज्य हैं वह पाप की जड़ें बनते जा रहे हैं। यमराज का भय प्राणियों में से निकाल रहे हैं। हो सकता है आगे चलकर रूढ़िवादी के नाम पर एक प्रकार का वाम मार्ग सा फैलाया जाये। आप अपने राज्य में श्रीमद्भागवत की कथायें, वाल्मीकि रामायण की कथाओं के प्रचार को प्रोत्साहन दें।

बस्तर नरेश से मुझे पूर्ण सहानुभूति है चूकि उसने प्रजा के प्रेम का एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। इस समय भीलों में हिन्दू धर्म से मन से प्यार है विशेषकर उनकी भक्ति में ही हमारी जीवन की घड़ियाँ व्यतीत होनी चाहिए और वह भक्ति शंकर भगवान की कृपा के बिना मिलनी दुर्लभ है। इसलिये पशुपति नाथ को प्रणाम करना अनिवार्य है दो साइक्लोस्टाइल्ड अपनी विचारधारा की प्रतिलिपि आपको भेज रहा हूँ और कुछ पोस्टर जिनमें भगवान की आज्ञायें सारे धार्मिक व राजनैतिक नेताओं के लिये हैं वे भी भेज रहा हूँ। इस समय धर्म को प्यार करने वालों से मैं सम्पर्क स्थापित कर रहा हूँ।

आपका हितैषी
लक्ष्मीनारायण
आयुर्वेद शास्त्री

॥श्री कल्कि भगवते नमः ॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
१८–०६–१९६३

प्रिय सोहन लाल जी,

तुम्हारे भाग्य को मैं बधाई भेज रहा हूँ यद्यपि मुझे तुम्हारी चिंता रहती है। तुम्हारी ओर से मैं निश्चिन्त नहीं हूँ फिर भी तुम्हारी मुसीबत विपत्ति बड़ी सफल और तप रूप में दिखाई दे रही है क्योंकि कल्कि भगवान ने तुम्हें घोर विपत्ति में दर्शन दिये।

विपत्ति बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय,
इष्ट मित्र और बान्धवा जान पड़े सब कोय।

हम भी भुक्त भोगी हैं। हमारी बात पर सनातन धर्मियों को विश्वास नहीं हो रहा और हम से किसी का उद्धार नहीं हो रहा, इतना सरल हृदय रखते हुए भी ये क्या कम विपत्ति और बेइज्जती की बात है। शायद आपने पढ़ा हो कल्याण (गीता प्रेस, गोरखपुर (उ0प्र0) से प्रकाशित होने वाला मासिक आज भी निकलता है।) अखबार ने हम जैसों को भ्रान्तियुक्त अथवा निहित स्वार्थ वाला बताया है आपको जो भगवान सुख दे रहे हैं वे ठीक ऐसे हैं जैसे कांटों में गुलाब का फूल। शायद ऐसे ही सुखों को देखकर कुन्ती ने भगवान से यह वर मांगा हो कि हम पर तो हमेशा मुसीबत ही पड़ती रहे। खैर, अब मैं आपको यह पत्र एक सुनार की हैसियत से नहीं एक कल्कि भगवान के गण की हैसियत से लिख रहा हूँ। धनाभ्यास, देहाभ्यास और जाति का अभ्यास तीन बड़े विघ्न होते हैं। मैं तुम्हें इनसे ऊपर उठा हुआ देखना चाहता हूँ। अब भाई साहब मैं अपने दिल का दु:ख आपसे कह सकता हूँ। जितनी भी जातियाँ हैं उनके सामने कोई ध्येय नहीं है या तो कांग्रेसी बन कर धर्म को बरबाद करने में समय बिताते हैं और खाते हैं या आर्य समाजी बन कर ब्राह्मणों की मजाक उड़ाते हैं या इनसे भी बचे तो धन में मदान्ध हो कर कीर्तन भजन से पल्ला बचाये फिरते हैं। रामायण की एक चौपाई है कि–

भजहु न रामहि सो फल लेहु।

सृष्टि में उथल पुथल मचनी है हमें आपको तटस्थ होकर कल्कि भगवान के चरणों में ही मन को लगाना है। आपसे पूछकर कोई अपने जीवन का ध्येय बनायेगा न मुझसे पूछकर। शेष क्या लिखूँ अब तो स्वयं भगवान ने ही आपका हाथ पकड़ा है। आशा करता हूँ कल्कि भगवान और कल्कि मण्डल की आबरू और शान का ध्यान रखते हुए समस्त वादों से पृथक रहते हुए, हमेशा के वफादारी का हलफ़ लेकर कल्कि भगवान के काम में जुट जायेंगे। मनोकांत जी की, पाण्डेय जी की और मेरी जय श्री कल्कि भगवान की और यह पत्र हम किसी को न दिखा पाये न सुना पाये। मंत्री जी का प्यार और जय श्री कल्कि भगवान की और गुरु जी को आपके अनुभव से बड़ी प्रसन्नता हुई है। कुछ घड़ियों के लिये ये अपार मुसीबत भूल ही गये जिससे आपको यह पत्र लिख रहे हैं।

आपका
लक्ष्मीनारायण

होता है। कल्कि नाम के जाप से अवतार का तेज मिलता है। विश्वास मिलता है, कदम आगे बढ़ता है। कल्कि भगवान के अवतार की बात एक गुप्त रहस्य है जो कल्कि भगवान के पास है, वही दें तो मिले। तकदीर वालों (महाभाग्यवानों) का सौदा है।

बिना जाप किये मिलते नाहीं गोपाल कन्हाई गिरधारी

हम तुम जीवन की संध्या में चल रहे हैं जो समय निकल गया उतना अगाड़ी नहीं है। अच्छा हो यदि ये जीवन की आखिरी घड़ियां महाराज क्षीर सागर वासी कल्कि भगवान के काम में बीतें। जिन माई के बारे में आपने लिखा फिरोज़ाबाद वालियों के, उनको मेरी तरफ से हाथ जोड़कर चरणों में शीश रख कर जय श्री कल्कि भगवान की कहना। समय बरबाद करने की रत्ती भर भी गुन्जायश नही है। जो भी आपके प्यारे हैं उनसे कल्कि नाम की रटना करवाओ महाराज का खौफ अदब प्रेम परवाह रखते हुए। असरोही हम लल्लन, बटन, सत्यनारायण, टिल्लू भगत व रामेश्वर ६ जने गये थे। खूब कीर्तन, भजन व उपदेश हुए। महाराज की सवारी बड़ी धूमधाम से निकली थी। वैकुण्ठ का सा नज़ारा था। आनन्द आ गया। इससे भी ज्यादा आनन्द आपके पत्र पाने से हुआ। भैया हम तो सावन के अन्धे हैं हमें तो हरा ही हरा सूझ रहा है। कल्कि भगवान की ही बात अच्छी लगती है। यह ही ओढ़ना है और यही बिछौना है। तुमने वायदा किया था कि निश्चिन्त हो जायेंगे तो कल्कि का भजन करेंगे। भगवान जाने वह दिन कब आयेगा, जब आप हमारी दाहिनी बांह बनेंगे। अपने को तो गुरु की कृपा से व कल्कि भगवान की कृपा से आनन्द आ गया इसके अलावा और कोई बात अच्छी ही नहीं लगती इसलिये दुनिया वालों की निगाहों में हम बेकार से मालूम होते हैं।

मन भजन में रहो घर या वन में रहो,
मिली रसना हरि नाम गाने को है।
सब रहेगा यही अपना कुछ भी नहीं,
नाम ही अन्त में काम आने को है।
नाम पावन भी है मन भावन भी है,
तप्त जीवन में सुख रूप सावन भी है।
नाम का जाप कर पाप कट जायेंगे,
क्रूर कलियुग के पांसे पलट जायेंगे।
विश्व करतार कल्कि कहाने को है........
सांवरे से लगन जो लगाने लगे,
यूं कहो भाग्य अपने जगाने लगे।
बिन भजन मन की कलियाँ खिलेंगी नहीं,
कृष्ण की कुन्ज गलियाँ मिलेंगी नहीं।
आजकल में समय बीत जाने को है.......

आपका
लक्ष्मीनारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः ॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
२१–१२–६५

श्रीमान डॉक्टर बनर्जी साहब,
आपके पुनर्जन्मों के अनुसंधान कार्यों के परिश्रम को देखकर और टर्की में आपके साथ, जो आपके काम में बाधायें खड़ी करी गई और लड़के के मां बाप के द्वारा आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया, उससे मुझे आपके धैर्य को देखकर प्रेम भी हुआ और सहानुभूति भी हुई और दर्शनों की अभिलाषा भी अत्पन्न हुई। यदि आप मुझसे मिल लें तो आपको खजाने के खजाने पूर्व जन्म के बारे में मुझसे मिलेंगे और आध्यात्मिक उन्नति में सहायता मिलेगी और पुनर्जन्म में आपकी आस्था दृढ़ और निश्चयात्मक हो जायेगी। जो हिलाए से नहीं हिलेगी। मेरा काम बचपन से पुनर्जन्म के जानने वाले महात्माओं से ही पड़ा है। जिनको हमारे शास्त्रों में जातिस्मर कहते हैं। मेरी आयु ७२ वर्ष की है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, इससे आप मुझसे जल्दी से जल्दी मिल लें फिर आपको और जगह खोज नहीं करनी पड़ेगी।

आपका लक्ष्मीनारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः ॥

६५७, कूण्डे वालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली–६
२३–०६–१९६४

श्रीमान पण्डित शादीलाल जी,
जय श्री कल्कि भगवान की।

आपका पत्र पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई विशेषकर इस बात से कि आपके दिमाग में हमारा ख्याल विद्यमान है। ख्याल न होता तो आप चिट्ठी क्यों डालते। हम आपकी लगन में और दर्शनों की लालसा में आपके जैतपुर गये थे परन्तु आपके दर्शन न हो पाये।

शादी बीबिया की कल्कि भगवान ने स्वप्न देकर कराई है। असरोही भी गये थे वहाँ कल्कि भगवान का हर साल चैत्र बदी अष्टमी को मेला लगता है। दूर दूर से देहात का आदमी आया था। वहाँ वालों ने कल्कि की भक्ति के प्रचार में हमारा पूरा पूरा साथ बच्चे बच्चे ने दिया। आपसे भी हमने बड़ी आस लगा रखी थी। यदि आप महाराज के नाम की मालायें करते तो अब तक के लम्बे अर्से में न मालूम क्या क्या दिखा होता। श्रद्धा भी बढ़ती गई होती। कल्कि भगवान की भक्ति के प्रचार की हम आपसे आशा करते हैं। आपको बाजा भी आता है। साधन भी आपके पास हैं। कीर्तन से भक्तों का उद्धार

जानते। नाम जपने में कितना परिश्रम होता है, कितनी थकान होती है और नाम जपने से क्या क्या अवस्थायें आती हैं, यह जभी पता चलता है, जब आदमी लगातार भजन करे, वह ही नाम की महिमा को समझ सकता है।

सवेद धातुः पदवीं परस्यदुरन्त वीर्यस्य रथाङ्ग पाणेः
योऽमायया सन्ततयानुवृत्याभजेत तत्पाद सरोज गन्धम्

अर्थः- दुरन्त वीर्य सुदर्शन चक्रधारी की वास्तविक पदवी को वह मनुष्य जानता है जो माया रहित निष्कपट भाव से लगातार रात दिन ईश्वर का भजन करता है उनके चरण कमल की सुगन्धि का सेवन करता है।

अव्यावृत भजनात

(नारद भक्ति सूत्र)

अखण्ड भजन से भगवान की महिमा दिखती है।

स कीर्त्यमानः शीघ्रमेवाविर्भवति अनुभावयति च भक्तान्

यह कीर्तन किया हुआ शीघ्र ही प्रकट हो जाता है और भक्तों को अनुभव करा देता है। ईश्वर का ज्ञान इस मनुष्य शरीर में ही हो सकता है। इस बात को भारतवर्ष के ही लोग जानते हैं, योरोप वाले नहीं। ईश्वर से बहिर्मुख होने से म्लेच्छ बन जाते हैं। हमारा देश ईश्वर और धर्म प्रधान है इसलिये यहाँ ईश्वर अवतार लेता है। आप बुद्धिमान हैं आपको तो इशारा ही बहुत है। काम करने का समय है। अध्रुव शरीर से ध्रुव कार्य कीजिये। आपके संस्कार पहिले जन्मों के बड़े प्रबल हैं, यह जन्म भी ज्योतिर्मय बना डालिये।

आपका और आपसे प्रेम रखने वाला
लक्ष्मी नारायण
भूतपूर्व रामकृष्ण परमहंस
महाभारत काल का माधव सात्यकि

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७ कूण्डेवालान
अजमेरी गेट, दिल्ली-6
२७-६-६३

श्रीमान सम्पादक जी,
कल्याण, गीता प्रेस, गोरखपुर।

आपके पत्र में करीब २० वर्ष पहले जय दयाल गोयनका जी का निर्णय कल्कि अवतार के बारे में छपा था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि ४,३०,००० वर्ष तक कल्कि अवतार नहीं होगा और कल्कि भगवान का नाम लेने वाले, चर्चा करने वाले ढोंगी आदमी हैं, कुछ इसी प्रकार से निन्दा से भरी हुई बातें कही थी। अबकी बार फिर आपने कृपा करी है कि कल्कि अवतार की बात करने वाले या तो भ्रमित हैं

भाई साहब आजकल डेढ़ साल से कल्कि भगवान महाराज ने हमारे लिये अनुभव में एक काम भेजा है उन्होंने वायदा किया है कि

जय कल्कि जय जगत्पते। पद्मापति जय रमापते॥

इस मंत्र से पुकार करो, तुम्हारा भी बल बढ़ेगा देश का भी बल बढ़ेगा और मैं जल्दी ही युद्ध छेड़कर भार उतारूंगा। प्रतेक रविवार को यदि आप हमें अकेला नहीं चाहते हैं तो घण्टे दो घण्टे आध घण्टे दस मिनट जितना भी अवकाश मिले, सामूहिक रूप से और जिस समय मन में कोई काम की बात न सोचने को हो तो इसका उच्चारण करते रहें। कुटुम्ब परिवार के बच्चे बच्चे को यह नाम रटवा दें। अण्डा, मुर्गी, मछली, सुअर, गाय, बैल, भैंस जो इस समय के प्राणियों का प्रिय भोजन है, इससे दूर रहें क्योंकि विष्णु भगवान शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी, जीव जगत विशिष्ट अद्वैत सगुण ब्रह्म शेष शायी क्षीर सागर वासी, महाविष्णु के अवतार श्री कल्कि भगवान महाराज की भक्ति का यह मार्ग है। इसमें निरामिष भोजन होने से प्रगति होती है।

हमारी भी कोई ७२ साल की उम्र है आपकी भी कोई ६७ साल की होगी। इस समय तो हमें और आपको हर समय तुलसी और कल्कि भगवान का नाम मुख में रखना ही चाहिए।

कल्कि भगवान को छोड़कर संसार मिथ्या है। इस नाम से एक पंथ दो काम होते हैं। अपना ईश्वर से सम्बन्ध बंधता है, ब्रह्म का आनन्द मिलता है। अगले जन्म के लिये भगवान के प्रेम व सम्बन्ध की नींव धरी जाती है। भारतवर्ष की शक्ति बढ़ती है और भारतवर्ष के हिन्दू धर्म के शत्रुओं के संहार के कारण बनते हैं।

जितेन्द्रनाथ राय बारीसाल वाले, सीतानाथ डे के साथ हमारे घर भी आये थे, मिल गये, बड़ा प्रेम कर गये और सीतानाथ डे के हाथों खजूर की एक भेली भेजी थी। यदि आप पत्र भेजें तो उन्हें भी कल्कि भगवान का नया मन्त्र व नया हुक्म व नया काम जो हम लोगों के सिर पर आया है लिख दें। यह आध्यात्मिक काम केवल Theory नहीं है प्रत्यक्ष है। इसमें लापरवाही करना जुर्म है। सीतानाथ डे यह दिल्ली में सन् १९३५ के पहले Secret Societies के Organiser थे। उन्होंने अपना नाम ब्रह्मचारी रख छोड़ा था, उनके चेचक (बसन्त) निकल आई थी। हमने उन्हें घर पर छिपा कर रक्खा था। उनका इलाज किया था उन्होंने उसका बड़ा उपकार माना व जितेन्द्रनाथ राय ने भी आभार माना। कल्कि भगवान के काम के सामने और सब काम हमें क्षुद्र और तुच्छ मालूम देने लगे। सुशीलचन्द्र लायडी हमारे साथ जेल में कई महीने रहे। उन्होंने आठ दिन कल्कि नाम के जप में ऐसी रगड़ लगाई कि ऐसे सच्चे मन से रगड़ लगाने वाला आज तक मुझे एक न मिला। आठ दिन के भीतर ही ईश्वर आत्म ज्योति रूप से उनमें प्रगट हो गये। मैं उनको अपना बड़ा मानता था परन्तु वह मुझे अपना बड़ा गुरु मानने लग गये थे, कहते थे कि आप हमारे लिये अपने भोजन में से एक ग्रास छोड़ दिया कीजिये। आज से आपकी कोठरी में झाड़ू सत्ता (एक नौकर सफैया था) नहीं लगायेगा। आपके तसले कटोरी मैं माजूंगा और कटोरी मैं धोया करूँगा मेरा हक है। यह कह कर मेरे साथ झगड़ा करते थे और मैं हँसता रहता था। आज वह होते तो मेरी कदर

कम्युनिष्ट बने हुए हैं और उन्हें इस समय कोई रास्ता नहीं मिल रहा। लीडरों ने भी, भारत के नेताओं ने भी अपना ध्येय योरोप को बना लिया। जिससे भारत ने आज राज शक्ति व राज्य शासन हाथ में आने पर भी भारत में गौ हत्या हो रही है और पीढ़ी दर पीढ़ी(Generation पर Generation)

हरि हर विमुख धर्म रति नाहि
ते नर तहाँ न सपनेहु जाहि।

ऐसे लोग भगवान को स्वप्न में भी नहीं पा सकते। मुझे भगवान विश्वास देते चले गये और मैं अपने ध्येय से चिमटा खड़ा हूँ तो मेरी दो घरवालियों ने आखिरी श्वास तक कल्कि नाम जपा। भाई, भाई की बहू, भाई के बेटे, हमारे तीनों लड़के, पोते और पोतियां तक और सारी रिश्तेदारियाँ कल्कि नाम जप रहे हैं और कल्कि नाम की नई आशा से भारी अनुभूतियाँ प्राप्त कर रहे हैं। दो महाभारत हो चुकी हैं तीसरी आ रही है। जो एटम बमों से लड़ी जाएगी जिसकी कल्कि भगवान तैयारी कर रहे हैं। जिसको रोकने के लिये अंग्रेज के चेले अंग्रेज के उत्तराधिकारी, अंग्रेज की मान्यताओं और परम्पराओं को भारतवर्ष में जारी रखने की इच्छा वाले भारतवर्ष के यह टिंडक भिंडक शास्त्री वगैरह नेता लोग ऐढ़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं और यह तीसरी महाभारत रुकेगी नहीं, यह कल्कि भगवान की दी हुई पूर्ण आहुति होगी या युद्ध यज्ञ की पूर्ण आहुति होगी। हमारे तुम्हारे साथी क्रांतिकारी लोग थे तो दैवी सम्पत्ति के परन्तु इस समय मार्ग भ्रष्ट, पथ भ्रष्ट और ध्येय भ्रष्ट होकर अधिकतर कम्युनिष्ट हो रहे हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ मेरे ऊपर भी लगातार ऐसी पड़ती रहीं कि आप देखते तो आप रो पड़ते परन्तु उनमें भी कल्कि भगवान ने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा।

कठिनाइयों दुःखों का इतिहास ही सुयश है।

ऋषि मुनि और देवता हो गये सब अज्ञान।
अंग्रेजी पढ़ते फिरे कर करके अभिमान॥
अंग्रेजी को त्याग दो जिमि त्यागे अहि कांचली।
करो असुर से रारि करि भक्त प्रह्लाद जिमि॥
हे माया सुन्दरि मम आज्ञानुसार।
असुर से असुर भिड़ाय के कर डारो संहार॥

कल्कि भगवान के नाम बिना जीवन मुर्दे के ही समान है। इतना बड़ा काम जिस नाम के आधीन है उस नाम को भला मैं कैसे छोड़ सकता था और उसके बिना मैं कैसे जी सकता था। मेरे जीवन का एक-एक मिनट बेकार नहीं गया। रेते में सिर छिपाकर नहीं पड़ा रहा। हम तुम जीवनी की संध्या में चल रहे हैं। जो आयु निकल गई वह आगे दिखाई नहीं दे रही, जंगल में चलते हुए दीपक की तरह न मालूम हवा का कौनसा झौंका कब बुझाकर चला जाये, इसलिये सारी उम्र सोना ठीक नहीं।

प्रिय जितेन्द्र,

तुम्हारे पत्र मिलने से मुझे इतना आनन्द हुआ जैसे किसी का मरा हुआ आदमी लौट आये या जैसे किसी नि:संतान के घर में संतान हो जाये। सिवाय तुम्हारे आज तक मैंने किसी क्रांतिकारी को पत्र नहीं लिखा। तुम्हारा अनुभव था कि जेल की कोठरी में रामकृष्ण परमहंस ने कहा कि आओ मंत्र तुम्हे हम देंगे और वह मंत्र तुम्हें कल्कि भगवान ने मेरे द्वारा दिलवा दिया। इसलिये मेरा मन तुम्हारी तरफ ऐसे लगा रहता है जैसे पक्षी का मन अपने अण्डे और घोंसले में लगा रहता है। वैसे मैं बड़ा बेप्रीत, निष्ठुर और कठोर आदमी हूँ। संसार में सिवाय कल्कि भगवान के न कोई प्यारा है और न कोई प्यार करने योग्य है। जितना जो आदमी मेरे कल्कि भगवान से प्रेम करता है और सन्मान करता है उतना ही मैं उससे प्रेम करता हूँ और सन्मान करता हूँ, नहीं तो मैं सबको अपदार्थ और तुच्छ वस्तु समझता हूँ और उससे मैं एक सैकण्ड को भी प्रेम करने को तैयार नहीं हूँ। मेरे गुरु ने और मेरे गुरु के बताये मार्ग पर चलने से कल्कि भगवान ने मुझे यह लालच लगा दिया कि कल्कि नाम जपने से सारी पृथ्वी पर्यन्त के दुष्ट असुरों का बीज नाश हो जायेगा। जहाँ से सूर्य उदय होते हैं और जहाँ सूर्य अस्त होते हैं वहाँ तक के गौ हत्यारों का दहन और विध्वंस हो जायेगा। वेद, पुराण, शास्त्र सन्तों और सदग्रन्थों और ब्राह्मणों के सन्मान की स्थापना की जायेगी। मुझे ईश्वर की ओर से काम मिला मैंने अपना जीवन कल्कि भगवान को समर्पण करके कल्कि भगवान के नाम जपने में लगा दिया। मुझे भगवान ने सफलता दी और जितना काम किया उसका फल हाथों हाथ मिला। अगले जन्म में जो आध्यात्मिक सुख जगन्माता के रूप में मुझे दिया था, उससे असंख्यों गुना इस जन्म में कल्कि रूप से मुझे दिया है। आज मेरा काम निश्चयात्मक है। योरोप के भौतिकवाद का कोई ध्येय नहीं है उनके यहाँ खाली कामिनी और कंचन (Gold&Woman) हैं, जो ईश्वर के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हैं, भगवान से जीव को कभी मिलने नहीं देते और जीव को खाली कुत्ता व बिल्ली बनाये रखते हैं। हमारे यहाँ अर्थ धर्म काम और मोक्ष (भगवान)चार वर्ण हैं और चार आश्रम हैं।

द्वीपानाम् द्वीप राजोअयम्।

भारतवर्ष सारे संसार का राजा है। भगवान का प्यारा अपना देश है। भगवान का अपना प्यारा सनातन धर्म है। इसकी रक्षा के लिये वे अवतार लेते हैं। जितने उस समय क्रांतिकारी थे वे इस समय

मेरा हाल लिखा है। कल्कि नाम का वर्णन है। मेरे गुरु बालमुकुन्द जी का वर्णन है। अदालत की फाईलों में कल्कि नाम लिखा है। मेरा नाम लक्ष्मीनारायण है।

आप पत्र का उत्तर तो देंगे ही, यदि आप जल्दी से जल्दी मिललें तो अच्छा होगा। मुझे बहुत विषयों पर आपसे बहुत बातें करनी हैं।

आपका लक्ष्मीनारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

देहली दिनांक १८ फरवरी १९६१

पशुपति नाथ के कृपा पात्र नरेश जी,

आशीर्वाद। जय पशुपति नाथ महादेव की। एक ब्राह्मण के नाते इस पत्र को पढ़ने के लिये कष्ट दे रहा हूँ। ब्राह्मण व क्षत्रियों का सनातन सम्बन्ध है। शास्त्रों में आप लोगों को भगवान विष्णु की भुवन पालनी शक्ति लिखा है। पहला मेरा काम यह है कि मेरी ओर से आशुतोष पशुपति नाथ जी को नमस्कार कहियेगा। दूसरे गण्डक गंगा को मेरी ओर से नमस्कार कहियेगा।

राजनीति, सन्धि, विग्रह के धर्मों को आप स्वयं अच्छी तरह जानते हैं। मुझे तो आप से केवल एक बात कहनी है वह यह है कि आपके अधिकार अभी सुरक्षित हैं और उन्हें आप किसी के दबाव में आकर एकाएक त्याग न दें। संसार में जितने प्रचलितवाद हैं ये सब गौ के शत्रु हैं। जहाँ कहीं कब्जा जमाते हैं धर्म निरपेक्षता के नाम पर गौ हत्या प्रारम्भ कर देते हैं और वर्णाश्रम धर्म को नष्ट-भ्रष्ट करके ब्राह्मण कन्याओं के साथ अन्य वर्णों का अनुचित वैवाहिक सम्बन्ध कराकर, जो कि मातृगामी होने के समान है, उस महापाप को फैलाना चाहते हैं। इसलिये आपके होते हुए मेरे प्यारे पशुपति नाथ की धरती पर गौ हत्या न प्रारम्भ हो इसकी मुझे रात-दिन चिन्ता लगी रहती है। इसलिये आप अपने सब अधिकार सुरक्षित रक्खें और किसी के दबाव में न आयें। एक भी अच्छी नियत का राजा प्रजा में स्वर्ग का आनन्द फैला सकता है और सैंकड़ों कपटी लोग प्रजाओं में सदाचार,आस्तिक बुद्धि व परलोक में विश्वास नहीं फैला सकते केवल असंतोष ही बढ़ाते हैं। प्रजाओं की सुख, समृद्धि का शास्त्रानुकूल ध्यान आप स्वयं ही रक्खें और प्रजाओं के मन को अपनी ओर आकर्षित करें। ये पोस्टर मैं भेज रहा हूँ आप जहाँ जहाँ उचित समझें लगवा दें एक पशुपति नाथ के मंदिर पर अवश्य लगवा दें।

आपका लक्ष्मीनारायण

॥श्री कल्कि भगवते नमः॥

६५७, कूण्डेवालान
अजमेरी गेट, देहली-६
५-११-६५

पापों के फंदे से छूटने की परवाह रहती है और उल्टी यह प्रेरणा मिलती है कि पाप पुण्य केवल रूढ़ि है। कोई पाप नहीं कोई पुण्य नहीं। सब वर्णों को ब्राह्मणों की स्त्रियों से विवाह करने के लिये भड़काया जाता है जो कि मातृगामी और गुरु पत्नी गामी होने के अपराध के बराबर है और प्राणियों को चाण्डाल बनाता है। आए दिन जातियाँ–पातियाँ तोड़ने की धमकियाँ दी जाती हैं जो दूसरे अर्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों के वंश नाश की धमकियों के नाश के बराबर है और पाप को जल्दी से जल्दी फैलाने के लिये, यमराज का भय निकालने के लिये और पाश्चात्य सभ्यता में हमें और हमारी सन्तानों को जबरदस्ती रंगने के लिये मास्टर प्लान इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट के नाम से बसे बसाए, बने बनाए शहरों को तोड़कर इसाई सभ्यता के नमूनों का बनाया जा रहा है। अण्डा, मुर्गी, सुअर, बकरी, गाय, भैंस, मछली खाने व खिलाने की आदत डालकर अहिंसा की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। वर्ण धर्म का तोड़ने के लिये ठीक षड्यंत्र की तरह सिनेमाओं पर गंदे–गंदे गाने सुनवाकर लड़के व लड़कियों के शील की हत्या की जा रही है। धर्म की मर्यादा को तोड़ने के लिये, भारत की भारतीयता को तोड़ने के लिये और वर्ण धर्म को तोड़ने के लिये, लड़के लड़कियों को धर्म से नफ़रत दिलाने के लिये, उनसे धर्म निरपेक्ष होने के लिये कहा जाता है गोया धर्म करना महापाप है। शास्त्रों में कहा गया है कि धर्म की तरफ़ से मुँह न मोड़ो और यहाँ सिखाया जा रहा है कि धर्म की तरफ़ से पीठ मोड़कर बैठ जाओ। यह जगत भगवान गोविंद की गौएं भी खा रहा है और धर्म जो भगवान का कलेजा है उस पर प्रहार भी कर रहा है और फिर जगत भला मानस भी बना बैठा है। यह सब विदेशी विधर्मी जगत की संगति का ही फल है फिर हम उसकी जय कैसे मना सकते हैं।

अब आपको मैं अपना परिचय दे दूँ। मेरा सन् १९०४ से राजनीति से प्रेम रहा है। मैं राजनीति व धर्म को दो नहीं जानता। मास्टर अमीरचंद, अवध बिहारी और रासबिहारी बोस का साथी हूँ। लार्ड हार्डिंग बम केस में पकड़ा गया था। बनारस कौंसप्रेसी केस में भी पकड़ा गया था और पाँच साल जेल में रहा हूँ। सन् १९१० से मेरा भगवान से काम पड़ा जिसमें मुझे हिन्दू धर्म भगवान का प्यारा दिखाई दे गया। जेल की कोठरी में भी मैं सूना नहीं रहा। भगवान के नाम का आनंद लेता रहा। ईश्वर के दिये अनुभवों से ब्राह्मण सच्चे साबित हुए।

ब्राह्मण, पुनर्जन्म, मूर्ति पूजा, श्राद्ध तर्पण, लोक परलोक, ईश्वर के दर्शन, अवतार के नामों के जप की महिमा, सब सत्य सिद्ध हो चुकी है। पाँच हज़ार वर्ष पहले जिन भगवान कृष्ण ने अवतार लिया था उन्हीं भगवान के मन में अवैष्णव अधर्मियों के संहार की और अपनी नई लीला फैलाने की फिर से मन में आई हुई है। कहीं ऐसा न हो कि भगवान के विचार में और आपके विचार में टक्कर हो जाए। मैं आशा करता हूँ कि आप इन भारत के गुमराह हुए पथभ्रष्ट नेताओं को दलदल में से निकालने का यत्न करेंगे।

मुझे भगवान कल्कि की दी हुई प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ हैं। उन्हीं के बल पर आपको मैंने यह पत्र लिखने की धृष्टता की है। मैं अपने देश का, अपने धर्म का, गौ ब्राह्मणों का नैतिकता और आने वाली संतानों का और आपका भी भला चाहता हूँ। शचीन्द्रनाथ सान्याल की रचित बन्दी जीवन नामक पुस्तक में

हो रहा है। सारे स्कूल बूचड़खाने से मालूम दे रहे हैं। **धर्म से घृणा या उदासीनता से चरित्र में पतन होता है** चरित्र के बिगाड़ने से तो किसी को जान से मार देना ही अच्छा है। जो काम औरंगज़ेब व अंग्रेज न कर पाए वह किया जा रहा है। यदि आप परलोक यात्रा से पहले दो हाथ लगा जाएं तो अच्छा है क्योंकि भारत पर अभी आप का प्रभाव है। मुझे आपसे आशा है आप मेरा नैतिक समर्थन करें।

आपका शुभाकांक्षी
(लक्ष्मीनारायण वैद्य)

॥श्री कल्कि भगवते नमः ॥

६५७, कूण्डेवालान, अजमेरी गेट, देहली–६

श्रीमान विनोबा जी,

आपके बयानात पढ़कर मुझे झुंझल आया करती है इसलिये आपसे खुलकर अपने मन के भाव लिखने को जी चाहता है। है तो बात ऐसी, पड़े पत्थर मुकद्दर पर, लड़ी है आँख पत्थर से, तीर नहीं तुक्का सही, शायद कामयाब हो जाऊँ क्योंकि इस समय हृदयहीन पत्थरों का राज्य है और मुझे इस समय चारों तरफ पत्थर ही पत्थर सूझ रहे हैं और मुझे इस समय ऐसा लग रहा है कि मैं लिख क्या रहा हूँ पत्थरों की बारिश कर रहा हूँ। मुझे नहीं मालूम आप पत्थर हैं या नहीं। भगवान करे आप पत्थर न निकलें और मैं गलत साबित हूँ। मैं एक ऐसा ब्राह्मण हूँ जिसको आजकल के प्रगतिशील सुधारवादी अपटूडेट नेतागण 18 वीं शताब्दी का ऊलजलूल बैकवर्ड, ध्यान देने के अयोग्य समझें परन्तु मैं यह पहले ही स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मुझे इस हिन्दू धर्म की सत्यता में विद्या के ज़ोर से नहीं, वाद–विवाद के ज़ोर से नहीं, सद्गुरु त्रिकालदर्शी ब्राह्मण के दिये हुए मंत्र के साधन के द्वारा विश्वास मिला हुआ है। मेरा अनुभव प्रत्यक्ष है जिसमें प्रमाण की आवश्यकता नहीं। आप यह कहा करते हैं कि अब हमारा नारा आगे जय जगत होना चाहिये। दूसरे मायने में जय पाप की होनी चाहिये क्योंकि गौवों को मारने में सारा जगत मय भारतवर्ष के एक है जिसको कि हमारे वेद पुराण शास्त्रों में महापाप लिखा है। दूसरा प्रमाण इसका यह भी है कि धार्मिक सिनेमा आता है वह आठ दिन में फेल हो जाता है और एक पाप का सिनेमा आता है जो महीनों चलता है। इसलिये पापियों की अधिकता है। नैतिक पतन और धर्म की तरफ से अरुचि होना, अविश्वास होना और स्त्री जाति को मां, बहिन, बेटी न समझना कुदृष्टि से देखने वालों का दिन प्रतिदिन बढ़ना जो हमारे शास्त्रों से मेल नहीं खाता जिसके बारे में गीता में श्री कृष्ण भगवान कह गए हैं कि कार्य और अकार्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं पथ प्रदर्शक हैं और **जो शास्त्र की विधि को त्यागकर स्वेच्छा से चलते हैं न उन्हें सुख मिलता है न सिद्धि मिलती है न परम गति मिलती है।** इस जगत से और इस जगत की शिक्षा से न तो हमें परलोक का ज्ञान होता है और न अतीन्द्रिय विषयों का ज्ञान होता है न हमें अगले जन्म के बारे में कुछ पता लगता है, न पतिव्रता की महिमा का कुछ ज्ञान होता है, न भगवान के जप, तप, पूजन की महिमा का ज्ञान होता है, न ईश्वर से हमारा सम्बन्ध जुड़ता है, न धर्मराज का भय होता है, न

श्री कल्कि भगवते नम:

६५७, कूण्डे वालान, देहली–६

प्रिय राष्ट्र पुरुषा, जय हिन्द

पत्र लिखने से पहले मैं आपको अपना परिचय दे रहा हूँ। देहली निवासी हूँ लक्ष्मीनारायण मेरा नाम है बनारस कांसपिरेसी केस में मुझे शचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ १४ फरवरी सन् १९१६ में पाँच साल की जेल काशी में सुनाई गई थी। बन्दी जीवन नाम की पुस्तक में जो शचीन्द्रनाथ सान्याल की लिखी है उसमें मेरा व मेरे गुरु का व मेरे इष्ट का हाल लिखा है। सन् १९०४ में मुझे जातिस्मर (रामावतार) के जन्म का हाल जानने वाले महर्षि बालमुकुन्द जी से कल्कि अवतार के तप व पूजा की विधि मिली जिससे मुझे सनातन हिन्दू धर्म में, ईश्वर का दिया हुआ पूर्ण विश्वास ठीक उसी प्रकार से मिला जिस प्रकार से तुलसीदास या रामकृष्ण परमहंस को। भगवान का अवतार, पुनर्जन्म, मूर्ति पूजा, पुराणों का सिद्धान्त, ब्राह्मणों का जन्म से ब्राह्मण माना जाना, पतिव्रत धर्म, भगवान की नवधा भक्ति, ये सब अनुभवों से सत्य प्रमाणित हो गए। सन् १९१० से मेरा भगवान से काम पड़ता ही चला गया। ये विषय मेरे लिये छायावाद या रहस्यवाद नहीं रहे। ब्राह्मण, पुराण सत्य निकले, कल्कि भगवान की नई लीला के नए राज्य शासन आदेश मेरे पास आए हुए हैं। पाँच साल जेल की कोठरी के साधन से मुझे अलग थलग (इकौसा) रहने का अभ्यास सा पड़ गया परन्तु अब जैसी तांत बज रही है जैसा राग पहचाना जा रहा है उससे यह प्रतीत हो रहा है कि हमारे देश के नेतागण भौतिक उन्नति के साथ–साथ हमारे देश का, पारलौकिक सम्बंध का व हमारे धार्मिक अस्तित्व का सर्वनाश करने पर तुले हुए हैं जो बड़ा अपराध है। आर्थिक अवस्था प्रत्येक की चाहे कोई हो सुधारने तक तो कोई हानि नहीं परन्तु यदि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत व पद्म पुराण इत्यादि में वर्णित सदाचार की मर्यादा का खण्डन किया गया तो भारतवर्ष एक नरक का कुण्ड बनकर रह जाएगा। गौ हत्या जैसे महापाप को जारी रखना, इन्द्रिय संयम की ओर ध्यान न देकर परिवार नियोजन की आड़ में गर्भहत्या या भ्रूण हत्या का भय निकाल देना ब्राह्मणों की कन्याओं से इतर वर्णों के अनुचित वैवाहिक सम्बंधों को जाति–पाति तोड़कर फैलाना, जो मातृगामी होने का अपराध ही है, धर्म निरपेक्ष कह–कहकर परलोक का, यमराज का, धर्म का भय जीवों में से निकाल देना, इन से वह पाप फैलता दिखाई दे रहा है कि जिसका कोई प्रायश्चित, उतार नहीं। इस समय तो ऐसा लग रहा है जैसे देश के कर्णधारों का हिन्दू धर्म के नाश करने का ही एक ध्येय रह गया हो। ये पत्र आप महादेवी वर्मा को भी पढ़वा देना।

यह हिन्दू धर्म की मर्यादा मन्त्र–दृष्टा ऋषियों की और भगवान विष्णु के दर्शन व उन्हीं की सहमति से बाँधी मर्यादा है। जैसे पुरानी इमारतों की लिपाई और ईंटों को निकालने में छेनियाँ टूट जाती हैं उसी प्रकार भारत की देवियों में धर्म के निर्मूल करने वाले कानूनों को फलता–फूलता न देखकर सिनेमा की वैश्याओं का कला के नाम पर रेडियो के अश्लील गानों का सहारा देश में केवल वर्ण धर्म को तोड़ने के लिये करप्शन फैलाने के लिये लिया गया है। यह सब हमारे देश व धर्म व भावी सन्तति के साथ विश्वासघात

क्रमांक नाम पत्र पृष्ठ संख्या
१ श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन
२ श्री विनोबा भावे
३ श्री नेपाल नरेश
४ श्रीयुत जितेन्द्र नाथ सान्याल
५ श्रीमान सम्पादक महोदय (कल्याण गीता प्रेस)
६ डॉ0 बनर्जी साहब
७ श्रीमान पं0 शादीलाल जी
८ श्री सोहनलाल जी
९ श्री नेपाल नरेश
९ श्रीयुत पं0 महेश प्रसाद जी (सम्भल)
१० श्रीयुत महावीर प्रसाद जी (फिरोज़ाबाद, उ.प्र.)
११ श्रीयुत उमा शंकर जी
१२ श्रीयुत महावीर प्रसाद जी
१३ श्रीयुत बैजनाथ प्रसाद जी मिश्र (असरोही, उ.प्र.)
१४ प्रवचन–श्री गुरुजी (लखना, उ.प्र.)

समस्त सनातन धर्मावलम्बियों एवं समस्त कल्कि भक्तों को गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी द्वारा लिखित पत्रों का संग्रह समर्पित

दो शब्द

श्री कल्कि वचनामृत परम पूज्य श्री गुरुजी महाराज (परम वैष्णवाचार्य गुरुवर लक्ष्मीनारायण जी महाराज) द्वारा श्री कल्कि भक्तों को लिखे गए पत्रों का संग्रह है। इसका प्रथम संस्करण सन् १९७५ में प्रकाशित हुआ था। इन पत्रों से श्री गुरुदेव ने भक्तों को श्री कल्कि भगवान की भक्ति में दृढ़ता से ठोस चट्टान की तरह खड़े रहने का मंत्र दिया। इन पत्रों से श्री गुरुदेव के प्रत्यक्ष अनुभव, अदम्य उत्साह, भगवान श्री कल्कि जी की अमोघ, अहैतुकी, शुद्ध भक्ति स्पष्ट झलकती है। इन पत्रों में कीर्तन की महिमा, भक्ति का अनुपम, अलौकिक, अनूठा मार्ग भी दर्शाया है। कल्कि भगवान का नाम अमृत का भी अमृत है। इधर कुछ समय से श्री कल्कि वचनामृत की आवश्यकता महसूस की जा रही थी अतः द्वितीय संस्करण निकाला गया है। जिन भक्तों के सहयोग से यह प्रकाशन सम्भव हो सका है उन सब के हम अभारी हैं। आशा है भक्तजन इससे लाभान्वित होंगे।

श्री कल्कि वचनामृत

(अश्रुत अमृतवाणी)

लेखक:
पंडित लक्ष्मी नारायण आयुर्वेद शास्त्री

प्रकाशक:
श्री कल्कि मानस मंदिर
एल-२-५३, न्यू महावीर नगर
नई दिल्ली-११००१८
द्वितीय संस्करण १००० २०१० मूल्य: रुपये